موضوع الخطبة : الناقض التاسع: اعتقاد جواز الخروج عن شريعة الإسلام

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي/ حفظه الله

لغة الترجمة : الهندية

المترجم :فيض الرحمن التيمي(@Ghiras_4T)

शीर्षक:

नौवां भंजक: (इस्लामी शरीअ़त से निकलने के जवाज़ का आस्था)

الناقض التاسع: اعتقاد جواز الخروج عن شريعة الإسلام

प्रथम उपदेश:

إنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وسَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إله إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُواْ اتَّقُواْ اللّهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلاَ تَمُوتُنَّ إِلاَّ وَأَنتُم مُّسْلِمُون.

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُواْ رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالاً كَثِيراً وَنِسَاء وَاتَّقُواْ اللّهَ الَّذِي تَسَاءلُونَ بِهِ وَالأَرْحَامَ إِنَّ اللّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبا.

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلاً سَدِيداً * يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَمَن يُطِعْ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزاً عَظِيما.

प्रशंसाओं के पश्चात!

स्र्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है,और सर्वोत्तम मार्ग मोंहम्मद सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है,दुष्टतम चीज़ (धर्म में) अविष्कार की गई बिदअ़तें (नवाचार) हैं,धर्म में अविष्कार की गई प्रत्येक चीज़ बिदअ़त (नवाचार) है,प्रत्येक बिदअ़त (नवाचार) गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाजी है।

इस्लामी शरीअ़त मनुष्य एवं जिन्न सब के लिए समान है

अल्लाह के बंदो!अल्लाह तआ़ल से डरो और उस का भय अपने हृदय में जीवित रखो,उस का आज्ञा मानो और उस के अवज्ञा से बचो,और जान लो कि इस्लामी शरीअ़त मनुष्य एवं जिन्न सब के लिए समान है,यहां तक कि क़्यामत (प्रलय) स्थापित हो जाए,अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम से फरमाया:

﴿قل يا أيها **الناس** إني رسول الله إليكم **جميعا**﴾

अर्थात: (हे नबी!) आप लोगों से कह दें कि हे मानव जाति के लोगो!मैं तम सभी की ओर अल्लाह का रसूल हूँ।

लोगों में मनुष्य एवं जिन्न सब शामिल हैं।

और नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की ह़दीस है:मुझे पाँच चीज़ें ऐसी प्रदान की गई हैं जो मुझ से पूर्व किसी नबी को नहीं दी गईं,उन में आप ने यह भी बताया कि:पूर्व के नबी विशेष अपने समुदाय के लिए भेजे

जाते थे,मगर मैं समस्त लोगों की ओर (नबी बना कर) भेजा गया हूँ।[1]

अल्लाह तआ़ला ने सारे पैगंबरों से यह अनुबंध लिया कि यदि वह नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के युग को पाएंगे तो आप का अनुगमन करेंगे और आप की शरीअ़त पर अ़मल करेंगे

ऐ मोमिनों के समूह!अल्लाह तआ़ला ने समस्त पैगंबरों से यह अनुबंध लिया है कि यह यदि वह नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का युग पाएंगे तो आप की शरीअ़त का अनुगमन करेंगे और आप की सहायता करेंगे,अल्लाह तआ़ला ने फरमाया:

﴿وإذا أخذ الله **ميثاق النبيين** لما أتيتكم من كتاب وحكمة ثم **جاءكم رسول** مصدق لما معكم **لتؤمنن به ولتنصرنه** قال ءأقررتم وأخذتم على ذلكم إصري قالوا **أقررنا** قال فاشهدوا وأنا معكم من الشاهدين * فمن تولى بعد ذلك فأولئك هم الفاسقون * **أفغير دين الله يبغون** وله أسلم من في السماوات والأرض طوعا وكرها وإليه يرجعون﴾.

अर्थात:तथा (याद करो) जब अल्लाह ने नबियों से वचन लिया कि जब भी मैं तुम्हें कोई पुस्तक और प्रबोध (तत्वदर्शिता) दूँ,फिर तुम्हारे पास कोई रसूल उसे प्रमाणित करते हूये आये,जो तुम्हारे पास है,तो तुम अवश्य उस पद ईमान लाना,और उस का समर्थन करना,(अल्लाह) ने

---

[1] इस ह़दीस को बोखारी (३३५) और मुस्लिम (५२१) ने रिवायत किया है और इस अध्याय में अबूहोरैरह रज़ीअल्लाहु अंहु से भी ह़दीस वर्णित है जिसे मुस्लिम(५२३) ने वर्णन किया है।

कहा: क्या तुम ने स्वीकार किया,तथा इस पर मेरे वचन का भार उठाया?तो सब ने कहा:हम ने स्वीकार कर लिया,अल्लाह ने कह तुम साक्षी रहो,और मैं भी तुम्हारे साथ साक्षियों में हूँ।फिर जिस ने इस के पश्चात मूँह फेर लिया,तो वही अवैज्ञाकारी है।तो क्या वह अल्लाह के धर्म (इस्लाम) के सिवा (कोई दूसरा धर्म) खोज रहे हैं?जब कि जो आकाशों तथा धरती में है,स्वेच्छा तथा अनिच्छा उसी के आज्ञाकारी हैं,तथा सब उसी की ओर फेरे जायेंगे।

नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जब उ़मर रज़ीअल्लाहु अंहु के हाथ में अहले किताब (यहूद व ईसाई) के सहीफों (आकाशीय ग्रंथ) के कुछ पृष्ठ देखे तो क्रोधित हो गए और फरमाया:क़सम है उस हस्ती की जिस के हाथ में मेरा प्राण है,यदि मूसा भी जीवित होते तो उन को भी मेरा ही अनुगमन करना पड़ता।[2]

सह़ी ह़दीस में सिद्ध है कि ईसा बिन मरयम जब अंतिम युग में अवतरित होंगे तो इस्लामी शरीअ़त का अनुगमन करेंगे और उसी के आलोक में निर्णय करेंगे।[3]

---

[2] इस ह़दीस को अह़मद (३/३८७) ने जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अंसारी रज़ीअल्लाहु अंहुमा से वर्णित किया है और अल्बानी ने "إرواء الغليل" (६/३४) में इस ह़दीस को ह़सन कहा है।

[3] मसीह़ के अवतरित एवं उनका दज्जाल की हत्या की कहानी सह़ी मुस्लिम (२८९७) में अबूहोरैरा रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है,इसी प्रकार से (१५६) जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अंसारी रज़ीअल्लाहु अंहुमा से भी वर्णित है,तथा (२९३७) नवास बिन समआ़न अलकिलाबी रज़ीअल्लाहु अंहु से भी वर्णित है।

इस्लामी शरीअ़त अपने पूर्व के समस्त शरीअ़तों को निरस्त करने वाली शरीअ़त है

अल्लाह के बंदो!इस्लामी शरीअ़त अपने पूर्व के समस्त शरीअ़तों को निरस्त करने वाली शरीअ़त है,अर्थात इस्लामी शरीअ़त से पूर्व की शरीअ़तों में जो भी अह़काम थे,उन सब को निरस्त करने वाली है,सिवाए उन हुकमों के जो क़ुरान में नाज़िल हुए,अल्लाह तआ़ला ने फरमाया:

﴿وأنزلنا إليك الكتاب مصدقا لما بين يديه من الكتاب **ومهيمنا** عليه﴾

अर्थात:और (हे नबी!) हम ने आप की ओर सत्य पर आधारित पुस्तक (क़ुरान) उतार दी,जो अपने पूर्व की पुस्तकों को सच बताने वाली संरक्षक है।

अर्थात:ऐ रसूल!हम ने आ की ओर क़ुरान अवतरित फरमाया,इस में जो कुछ भी है वह सत्य है,जो अपने पूर्व की पुस्तकों की पुष्टि पर साक्ष्य है,और इस बात पर भी साक्ष्य है कि वे समस्त पुस्तकें अल्लाह की ओर से अवतरित हैं,उन पुस्तकों में जो आदेश हैं,उन की पुष्टि करता है,उन में जो विकृति हुई है,उस को स्पष्ट करता है,और उन के कुछ आदेशों को निरस्त करता है।

इस्लामी शरीअ़त क़यामत तक स्थापित रहेगी

अल्लाह के बंदो!इस्लामी शरीअ़त आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के आने से लेकर क़्यामत तक रहेगी,पूव की शरीअ़तों के विपरीत,क्योंकि वह अस्थायी हुआ करती थी और जब उस के पश्चात आने वाली शरीअ़त प्रकट होती तो वह निरस्त हो जाती और इसी प्रकार से यह श्रृंखला चलता रहता।

निष्कर्ष यह कि इस्लाम के द्वारा समस्त शरीअ़तों का,मोह़म्म्द सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के द्वारा समस्त पैगंबरों का और क़ुरान के द्वारा समस्म पुस्तकों का श्रृंखला समाप्त कर दिया गया

निष्कर्ष यह कि इस्लाम के द्वारा समस्त शरीअ़तों का,मोह़म्म्द सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के द्वारा समस्त पैगंबरों का और क़ुरान के द्वारा समस्म पुस्तकों का श्रृंखला समाप्त कर दिया गया।

इस्लामी शरीअ़त से निकलने के जवाज़ (वैधता) का आस्था रखना इस्लाम भंजकों में से है

अल्लाह के बंदो!उपरोक्त प्रमाणों के आधार पर यह स्पष्ट हो गया कि इस्लाम में प्रवेश होना और उस का अनुसरण करना इस्लाम धर्म के स्पष्ट मामलों में से है,किसी मनुष्य के लिए इस से अनजान रहने की गुंजाइश नहीं,अत: जो व्यक्ति यह आस्था रखे कि इस्लामी शरीअ़त से

निकलने के गुंजाइश है तो वह काफिर है,यद्यपि वह नमाज़ पढ़ता हो और रोज़ा रखता हो और मुसलमान होने का दावा ही क्यों न करता हो,अत: जो व्यक्ति यह कहे कि मनुष्य के लिए यहूदियत,अथवा ईसाइयत अथवा अन्य धर्म के अनुसार अल्लाह की पूजा करना जाएज़ (मान्य) है तो उस ने अल्लाह के साथ कुफ्र किया,अल्लाह का शरण।क्योंकि उस ने अल्लाह के आदेश का उल्लंघन किया और क़ुरानी सूचना को नकारा,इस भंजक का प्रमाण अल्लाह का यह कथन है:

﴿ومن يبتغ غير الإسلام دينا **فلن يقبل منه** وهو في الآخرة من الخاسرين﴾.

अर्थात:और जो भी इस्लाम के सिवा (किसी और धर्म) को चाहेगा तो उसे उस से कदापि स्वीकार नहीं किया जाएगा और वह परलोक में क्षतिग्रस्तों में होगा।

शैखुल इस्लाम इब्ने तैमिया रहिमहुल्लाह फरमाते हैं:मोहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब मसस्त मनुष्य एवं जिन्न,अ़रब व अ़जम,निकट एवं दूर,राजा व फकीर और ज़ाहिद (धर्मनिष्ठ) व गैर ज़ाहिद की केवल अल्लाह के भेजे हुए रसूल (सलल्लाहु अलैहि वसल्लम) हैं,बल्कि आप सब से अंतिम नबी हैं,और जो पुस्तक आप पर अवतरित हुई वह समस्त पूर्व की पुस्तकों की पुष्टि करने वाली और उन की रक्षक है

अत: जो व्यक्ति यह आस्था रखे कि किसी भी जीव (मनुष्य एव जिन्न) के लिए आप का अनुसरण और आज्ञा और जिस पुस्तक व नीति के साथ आप भेजे गए,उस के अनुगमन से निकलने का अधिकार है तो वह काफिर है।[4]संक्षेप के साथ आप का कथन समाप्त हुआ।

आप रहिमहुल्लाह अधिक लिखते हैं:यदि यह आस्था रखे कि नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के अतिरिक्त किसी और का मार्ग आप के मार्ग से अधिक पूर्ण है,और किसी वली (अल्लाह के मित्र) के लिए शरीअ़ते मोह़म्मदिया से निकलने की गुंजाइश है,तो वह काफिर है,तौबा कराने के पश्चात भी यदि वह अपने कथन पर जमा रहे तो उस की हत्या करना अनिवार्य है।संक्षेप के साथ मनकूल।[5]

कुछ ऐसे पंथों का उल्लेख जो विचलन का शिकार हुए और उस भंजक से ग्रस्त हुए

अल्लाह के बंदो!कुछ सूफी पंथों का यह आस्था है कि किसी के लिए इस्लामी शरीअ़त से निकलने की गुंजाइश है,ये वे पंथ हैं जिन्हें शैतान ने गुमराह कर दिया अत: वह अपने कुछ बड़ी हस्तियों के प्रति यह आस्था

---

[4] देखें:"مجموع الفتاوى" (२७/५९)।

[5] देखें:"مجموع الفتاوى" (२७/५८-५९) अधिक देखें:"مجموع الفتاوى" (११/४०१) और उसके पश्चात

रखने लगे कि-बज़ामे खेश-यदि वह मारफत बिल्लाह के एक निश्चित स्तर तक पहुंच जाएं तो उन के लिए नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुगमन को छोड़ना जाएज़ (वैध) है।नि:संदेह उन का यह कथन असत्य एवं निराधार है,क्योंकि पैगंबरजन समस्त जीवों से अधिक अल्लाह से अवगत थे,उस के पश्चात सह़ाबा,किन्तु उस के बावजूद वे अपने रब की पूजा करते रहे यहां तक कि उन की मृत्यु हो गई,उन में से किसी ने कभी भी फर्ज़ों को नहीं छोड़ा,न अवैध को वैध किया,बल्कि उन में से कुछ की मृत्यु रुकू में हुई,अथवा सजदा करते हुए,अथवा रोज़ा रखते हुए,अथवा स्मरण एवं क़ुरान का सस्वप पाठ करते हुए,वे अल्लाह से शुभ समाप्तिा की प्रार्थना किया करते थे,ये उसी दुआ़ का परिणाम है,हम भी अल्लाह से शुभ समाप्ति की दुआ़ करते हैं।

उन के कथन के असत्य होने का एक प्रमाण अल्लाह का यह फरमान है: ﴿واعبد ربك حتى يأتيك **اليقين**﴾

अर्थात:और अपने पालनहार की इबादत (वंदना) करते रहें,यहाँ तक कि आप के पास विश्वास आ जाये।

इस आयत में يقين का आशय मृत्यु है,मोफस्सेरीन (व्याख्याताओं) ने इस की यही तफसीर (व्याख्या) बयान की है।

रसूलुल्लाह सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के समस्त अगले पिछले पाप क्षमा कर दिए गए थे,उस के बावजूद आप ने अल्लाह के आदेशों पर अ़मल करना नहीं छोड़ा,बल्कि आप अधिक से अधिक प्रार्थनाओं एवं वंदनाओं में व्यस्त रहते,आप समस्त लोगों से अधिक मुत्तकी (धर्मनिष्ठ) और पुजारी थे,आप से कहा जाता तो आप फरमाते:क्या में अल्लाह का आभारी बंदा न बन जाउं।[6]

अल्लाह के बंदो!यह बात भी ध्यान देने की है कि इस भंजक में वे लोग भी शामिल हैं जो कहते हैं कि: (शरीअ़त प्राचीन काल के लिये उपयुक्त है,आधुनिक युग के लिए शरीअ़त अनुचित नहीं है,क्योंकि ऐसे मामले और नई नई चीज़ें आचुकी हैं जिन पर शरीअ़त चर्चा नहीं करती)।इस का मतलब यह है कि उन के अनुसार शरीअ़त में कमी व अपूर्णता पाई जाती है,जो कि एक निराधार बात है,क्योंकि इस्लामी शरीअ़त प्रत्येक युग एवं स्थान के लिए उचित एवं उपयोगी है,यहां तक कि क़यामत स्थापित हो जाए,इस में न कोई नुक्स है,न कमी और न गलती,इस लिए कि वह उस पालनहार की ओर से अवतरित है जो तत्वज्ञ है,अपने जीवों के हितों से अवगत और उस पर कृपालु एवं दयालु है।अल्लाह तआ़ला ने इस्लामी शरीअ़त को पूर्णता प्रदान किया है,फरमाया:

---

[6] देखें: सह़ी बोखारी (११३०) और सह़ी मुस्लिम (२८१९) वर्णनकर्ता मोग़ीरा बिन शोबा रज़ीअल्लाहु अंहु

﴿اليوم أكملت لكم دينكم وأتممت عليكم نعمتي ورضيت لكم الإسلام دينا﴾

अर्थात:आज मैं ने तुम्हारे धर्म तुम्हारे लिये परिपूर्ण कर दिया है तथा तुम पर अपना पुरस्कार पूरा कर दिया,और तुम्हारे लिये इस्लाम को धर्म स्वरूप स्वीकार कर लिया है।

इस्लाम के पूर्णता का एक दृश्य यह भी है कि वह प्रत्येक युग एवं स्थान के लिए उचित एवं उपयुक्त है,जो व्यक्ति इस्लाम पर अधूरा होने का आरोप लगाता है वह वास्तव में इस्लामी शरीअ़त को लागू करने वाले पालनहार (अल्लाह) पर नुक्स का आरोप लगाता है,अल्लाह तआ़ला इस से विरक्त व उच्च है,इसी प्रकार से जो व्यक्ति शरीअ़त पर नुक्स का तोहमत लगाता है वह उपरोक्त आयत के अर्थ पर ईमान नहीं रखता,क्योंकि आयत कहती है कि शरीअ़त पूर्ण है और वह कहता है कि शरीअ़त अपूर्ण है,इस लिए वह काफिर है,अल्लाह का शरण।[7]

अल्लाह के बंदो!इस्लामी शरीअ़त के अनिवार्य होने की अनिवार्यता और उस से निकलने की वैधता को स्पष्ट करने के लिए यह एक लाभदायक प्राक्कथन है।

अल्लाह तआ़ला मुझे और आप को क़ुरान की बरकत से लाभान्वित फरमाए,मुझे और आप को उस की आयतों और नीतियों पर आधारित

---

[7] **यह शैख सालिह़ बिन फौज़ान अलफौज़ान का कथन है जिसका उन्होंने "شرح نواقض الإسلام" पृष्ठ संख्या १८३ में उल्लेख किया है,प्रकाशक:مكتبة الرشد रियाज़**

परामर्श से लाभ पहुंचाए,मैं अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिए और आप सब के लिए क्षमा मांगता हूं,आप भी उस से क्षमा मांगें,नि:संदेह वह अति क्षमाशील कृपालु है।

द्वीतीय उपदेश:

कुछ आदेशों पर ईमान लाना और कुछ का इंकार करना भी इस्लामी शरीअ़त से निकलने में शामिल है

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده.

प्रशंसाओं के पश्चात!

अल्लाह के बंदो!आप अल्लाह का तक़्वा (धर्मनिष्ठा) अपनाएं और जान लें कि क़ुरान के कुछ आदेशों पर ईमान लाना और कुछ का इंकार करना,अथवा कुछ रसूलों पर ईमान लाना और कुछ का इंकार करना,इस्लामी शरीअ़त से निकलने के जैसा है।यद्यपि ऐसा करने वाला इस भ्रम में रहे कि वह पूरी शरीअ़त से नहीं निकला है,क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने पुस्तकों को अवतरित किया है और रसूलों को भेजा है ताकि लोग अपने दिलों से इन समस्त पर ईमान लाएं,अत: जिस ने उन में से किसी भी पुस्तक अथवा रसूल का इंकार किया उस ने कुफ़्र किया,अल्लाह तआ़ला का फरमान है:

﴿إِنَّ الَّذِينَ يَكْفُرُونَ بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ وَيُرِيدُونَ أَن يُفَرِّقُوا بَيْنَ اللَّهِ وَرُسُلِهِ وَيَقُولُونَ **نُؤْمِنُ بِبَعْضٍ وَنَكْفُرُ بِبَعْضٍ** وَيُرِيدُونَ أَن يَتَّخِذُوا بَيْنَ ذَٰلِكَ سَبِيلًا * أولئك **هم الكافرون حقا** وأعتدنا للكافرين عذابا أليما﴾.

अर्थात:जो लोग अल्लाह और उस के रसूलों के साथ कुफ्र (अविश्वास) करते हैं,और चाहते हैं कि अल्लाह तथा उस के रसलों के बीच अन्तर करें,तथा कहते हैं कि हम कुछ पर ईमान रखते हैं,तथा कुछ के साथ कुफ्र करते हैं,और इस के बीच राह बनाना चाहते हैं।वही शुद्ध काफिर हैं,और हम ने काफिरों के लिये अपमानकारी यातना तय्यार कर रखी है।

अल्लाह के बंदो!इस में वह व्यक्ति भी शामिल है जो यह कहता है कि मैं क़ुरान पर ईमान लाता हूं किन्तु ह़दीस पर नहीं,यह इस्लाम भंजकों में से है,क्योंकि दानों वह़्य (प्रकाशन) का इंकार करे अथवा एक का,दोनों ही स्थिति में वह काफिर है,अथवा यह कहे कि वह क़ुरान पर ईमान लाता है किन्तु उस में जो सह़ाबा के न्याय एव आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की पवित्र पत्नियों की विशुद्धता का उल्लेख किया गया है उस पर ईमान नहीं रखता,अथवा धर्मनिरपेक्षों की यह बोली बोले कि धर्म को जीवन के समस्त भागों से अलग करना अनिवार्य है,और यह कहे कि लोगों के लिए राजनीति एवं मामलों में धर्म से निकलने की गुंजाइश है,केवल पाँच सयम की नमाज़ ही प्रयाप्त हैं,तो यह भी कुछ आदेशों पर अ़मल करने और कुछ का इंकार करने का रूप है,अत: जो व्यक्ति ऐसा आस्था रखता है उस का ईमान समाप्त हो जाता है और इस्लाम से

निकल जाता है,अल्लाह का शरण।यद्यपि वह नमाज़ व रोज़ा का पालन करता हो और मुसलमान होने का दावा ही क्यों न करता हो,क्योंकि उस का आस्था इस्लामी शरीअ़त के विरुद्ध और अल्लाह की शत्रुता पर आधारित है,यद्यपि वह अपनी ज़बान से इसको स्पष्ट न करता हो,क्योंकि उस आस्था को देखा जाता है जो हृदय में होता है।

अज्ञानता व अभिमान एवं अहंकार दो ऐसे रोग हैं जिन्होंने उन दोनों पंथों को इस आस्था में डाल दिया कि इस्लामी शरीअ़त से निकलना जाएज़ है

अल्लाह के बंदो!उन सूफियों और धर्मनिरपेक्षों को इस भ्रामक आस्था में जिस चीज़ ने डाला है वह अथवा अज्ञानता व अनभिज्ञता है अथवा अभिमान एवं अहंकार है, अज्ञानता का इलाज ज्ञान एवं शिक्षा है और अभिमान एवं अहंकार का ईलाज अल्लाह की महानता को याद करना और यह भाव पैदा करना है कि मनुष्य को एक दिन अल्लाह के समक्ष उपस्थित होना है और इस्लामी शरीअ़त से मूँह फेरने पर अल्लाह उस का हिसाब लेने वाला है।

आप यह भी जान लें कि अल्लाह तआ़ला ने आप को एक बड़े कार्य का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन है:

﴿إن اللهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تسليما﴾

अर्थात:अल्लाह तथा उस के फरिश्ते दरूद भेजते हैं नबी पर,हे ईमान वालो!उन पर दरूद तथा बहुत सलाम भेजो।

اللهم صل وسلم على عبدك ورسولك محمد، وارض عن أصحابه الخلفاء، الأئمة الحنفاء، وارض عن التابعين ومن تبعهم بإحسان إلى يوم الدين.

हे अल्लाह!हमारे दिलों को निफाक (पाखंड) से,हमारे अ़मलों को दिखावे से और हमारी निगाहों को कदाचार से पवित्र कर दे।

हे अल्लाह!हम तुझ से दुनिया व आखिरत की समस्त भलाई की दुआ़ मांगते हैं जो हम को ज्ञात है और जो ज्ञात नहीं,और तेरा शरण चाहते हैं दुनिया एवं आखिरत के समस्त पापों एवं कदाचारों से जो हम को ज्ञात हैं और ज्ञात नहीं हैं।

हे अल्लाह!हम तेरा शरण चाहते हैं तेरी उपकारों की समाप्ति से,तेरी सुख के हट जाने से,तेरी अचानक की यातना से और तेरी हर प्रकार की अप्रसन्नता से।

हे अल्लाह!हम तुझ से स्वर्ग मांगते हैं,और वे कार्य एवं कथन भी जो स्वर्ग से निकट कर दे,औ हम तेरा शरण चाहते हैं नरक से और उन कार्यों एवं कथनों से भी जो नरक से निकट करे।

हे हमारे रब!हमें दुनिया में पुण्य दे और आखिरत में भालई प्रदान फरमा और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान कर।

اللهم صل على نبينا محمد وآله وصحبه وسلِّم تسليما كثيرا.

लेखक:

माजिद बिन सुलैमान अर्रसी

अनुवादक:

फैज़ुर रहमान हिफज़ुर रहमान तैमी